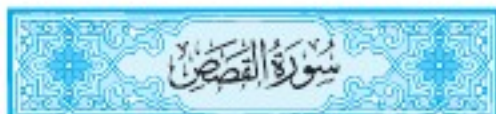


सूरह कसस - 28



सूरह कसस के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

इस सूरह का नाम इस की आयत नं० 25 में आये हुये शब्द ((कसस)) से लिया गया है। जिस का अर्थ: वाक्य क्रम का वर्णन करना है। इस सूरह में मूसा (अलैहिस्सलाम) के जन्म, उन का अपने शत्रु के भवन में पालन-पोषण, फिर उन के मद्यन जाने और दस वर्ष के पश्चात् अपने परिजनों के साथ अपने देश वापिस आने और राह में नबूवत और चमत्कार मिलने और फिरौन तथा उस की जाति के ईमान न लाने के कारण अपनी सेना के साथ डुबो दिये जाने का पूरा विवरण है। जिस से यह बताया गया है कि अल्लाह जो कुछ करना चाहता है उस के संसाधन इस प्रकार बना देता है कि किसी को उस का ज्ञान भी नहीं होता। इसी प्रकार किसी को नबी बनाने के लिये आकाश और धरती में कोई एलान नहीं किया जाता। अतः यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) कैसे और कब नबी हो गये।

- इस में यह बताया गया है कि अल्लाह जिस से काम लेना चाहता है उसे किसी राज्य और सेना की सहायता की आवश्यकता नहीं होती और अन्ततः वही सफल होता है।
- इस में यह संकेत भी है कि सत्य के विरोधी चमत्कार की माँग तो करते हैं किन्तु वह चमत्कार देख कर भी ईमान नहीं लाते जैसा कि मूसा (अलैहिस्सलाम) की जाति ने किया और स्वयं अपना विनाश कर लिया।
- यह पूरी सूरह नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सत्य नबी होने का प्रमाण भी है क्योंकि हजारों वर्ष पुरानी मूसा (अलैहिस्सलाम) की पूरी स्थिति का विवरण इस प्रकार वही दे सकता है जिसे अल्लाह ने वही द्वारा यह सब कुछ बताया हो। अन्यथा आप स्वयं निरक्षर थे और अरब में आप के पास ऐसे साधन भी नहीं थे जिस से आप यह सब कुछ जान सकें।
- इस में मक्का के काफ़िरों को कुछ ईसाईयों के कुर्आन पाक सुन कर ईमान लाने पर लज्जित किया गया है कि तुम ने अपने घर की बात नहीं मानी।

- और इस के अन्त में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को दिलासा देते हुये सत्य पर स्थित रहने का निर्देश दिया गया है।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طس

1. ता, सीन, मीम।
2. यह इस खुली पुस्तक की आयतें हैं।
3. हम आप के समक्ष सुना रहें हैं मूसा तथा फिरऔन के कुछ समाचार सत्य के साथ उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।
4. वास्तव में फिरऔन ने उपद्रव किया धरती में और कर दिया उस के निवासियों को कई गिरोह। वह निर्बल बना रहा था एक गिरोह को उन में से, बध कर रहा था उन के पुत्रों को और जीवित रहने देता था उन की स्त्रियों को। निश्चय वह उपद्रवियों में से था।
5. तथा हम चाहते थे कि उन पर दया करें जो निर्बल बना दिये गये धरती में तथा बना दें उन्हीं को प्रमुख और बना दें उन्हीं को^[1] उत्तराधिकारी।
6. तथा उन्हें शक्ति प्रदान कर दें धरती में और दिखा दें फिरऔन तथा हामान और उन की सेनाओं को उन की ओर से वह जिस से वह डर रहे^[2] थे।

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ

تَنَلُّوا عَلَيْكَ مِنْ نَبَأِ مُوسَى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَسْتَضِعُّ طَائِفَةً مِنْهُمْ يَتَّبِعُ أَبْنَاءَ هُمْ وَيَسْتَأْجِي نِسَاءَ هُمْ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ

وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضِعُوا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ

وَنُكَلِّمُنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنَرَى فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ

1 अर्थात् मिस्र देश का राज्य उन्हीं को प्रदान कर दें।

2 अर्थात् बनी इस्राईल के हाथों अपने राज्य के पतन से।

7. और हम ने बह्वी^[1] की मूसा की माता की ओर कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस पर भय हो तो उसे सागर में डाल दे, और भय न कर और न चिन्ता कर, निःसंदेह हम वीपस लायेंगे उसे तेरी ओर, और बना देंगे उसे रसूलों में से।
8. तो ले लिया उसे फिरऔन के कर्मचारियों ने^[2] ताकि वह बने उन के लिये शत्रु तथा दुख का कारण। वास्तव में फिरऔन तथा हामान और उन की सेनायें दोषी थीं।
9. और फिरऔन की पत्नी ने कहा: यह मेरी तथा आप की आँखों की ठण्डक है। इसे बध न करो, संभव है हमें लाभ पहुँचाये या उसे हम पुत्र बना लें। और वह समझ नहीं रहे थे।
10. और हो गया मूसा की माँ का दिल व्याकुल, समीप था कि वह उस का भेद खोल देती यदि हम आश्वासन न देते उस के दिल को, ताकि वह हो जाये विश्वास करने वालों में।
11. तथा (मूसा की माँ ने) कहा: उस की बहन से कि तू इस के पीछे-पीछे जा। तो उस ने उसे दूर ही दूर से देखा और उन्हें इस का आभास तक न हुआ।
12. और हम ने अवैध (निषेध) कर दिया

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ فَإِذَا خَفَتْ عَلَيْهِ فَأَلَيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَحْزَنِي إِنَّا رَادُّوهُ إِلَيْكَ وَجَاعِلُوهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۖ إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِبِينَ ۝

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرْتُ عَيْنِي ۖ وَلَكَ لَا تَقْضِي لَهُ ۖ عَلَيَّ أَنْ يَنْفَعَنِي أَوْ تَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۖ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فِرْعَاوْنَ كَادَتْ لِتُسَبِّدِي بِهِ ۖ لَوْلَا أَنْ تَبَطَّنَا عَلَيَّ قَلْبُهَا لِتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَقَالَتِ لَاحِظُهُ قُصِيهِ قُبُصَرْتُ بِهِ عَنْ جُنُبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلٍ فَقَالَتْ هَلْ

- 1 जब मूसा का जन्म हुआ तो अल्लाह ने उन के माता के मन में यह बातें डाल दी।
- 2 अर्थात् उसे एक संदूक में रख कर सागर में डाल दिया जिसे फिरऔन की पत्नी ने निकाल कर उसे (मूसा को) अपना पुत्र बना लिया।

उस (मूसा) पर दाईयों को इस से^[1] पूर्वा तो उस (की बहन) ने कहा: क्या मैं तुम्हें न बताऊँ ऐसा घराना जो पालनपोषण करे इस का तुम्हारे लिये तथा वह उस के शुभचिन्तक हों?

13. तो हम ने फेर दिया उसे उस की माँ की ओर ताकि ठण्डी हो उस की आँख और चिन्ता न करे, और ताकि उसे विश्वास हो जाये कि अल्लाह का वचन सच्च है, परन्तु अधिकतर लोग विश्वास नहीं रखते।

14. और जब वह अपनी युवावस्था को पहुँचा और उस का विकास पूरा हो गया तो हम ने उसे प्रबोध तथा ज्ञान दिया। और इसी प्रकार हम बदला देते हैं सदाचारियों को।

15. और उस ने प्रवेश किया नगर में उस के वासियों की अचेतना के समय, और उस में दो व्यक्तियों को लड़ते हुये पाया, यह उस के गिरोह से था और दूसरा उस के शत्रु में^[2] से। तो उसे पुकारा उस ने जो उस के गिरोह से था उस के विरुद्ध जो उस के शत्रु में से था। जिस पर मूसा ने उसे घूसा मारा और वह मर गया। मूसा ने कहा: यह शैतानी कर्म है। वास्तव में वह शत्रु है खुला कुपथ करने वाला।

16. उस ने कहा: हे मेरे पालनहार! मैं ने

أَذْكَرَكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتِ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَصْحُونَ ﴿١٠﴾

فَوَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ
وَلَنَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢﴾

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا
فَوَجَدَ فِيهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلَانِ هَٰذَا مِنْ شِيعَةِ
وَهَٰذَا مِنْ عَدُوٍّ ۖ فَاسْتَفَانَهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ
عَلَى الَّذِي مِنْ عَدُوٍّ ۖ فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ فَقَضَىٰ عَلَيْهِ
قَالَ هَٰذَا مِنْ غِلِّ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَهُ

1 अर्थात उस की माता के पास आने से पूर्वा

2 अर्थात एक इस्राईली तथा दूसरा किब्ती फिरऔन की जाति से था।

अपने ऊपर अत्याचार कर लिया,
तू मुझे क्षमा कर दे। फिर अल्लाह ने
उसे क्षमा कर दिया। वास्तव में वह
क्षमाशील अति दयावान् है।

17. उस ने कहा: उस के कारण जो तू
ने मुझ पर पुरस्कार किया है अब मैं
कदापि अपराधियों का सहायक नहीं
बनूंगा।

18. फिर प्रातः वह नगर में डरता हुआ
समाचार लेने गया तो सहसा वही
जिस ने उस से कल सहायता माँगी
थी, उसे पुकार रहा है। मूसा ने उस से
कहा: वास्तव में तू ही खुला कुपथ है।

19. फिर जब पकड़ना चाहा उसे जो
उन दोनों का शत्रु था, तो उस ने
कहा: हे मूसा! क्या तू मुझे मार देना
चाहता है जैसे मार दिया एक व्यक्ति
को कल? तू तो चाहता है कि बड़ा
उपद्रवी बन कर रहे इस धरती में
और तू नहीं चाहता कि सुधार करने
वालों में से हो।

20. और आया एक पुरुष नगर के किनारे
से दौड़ता हुआ, उस ने कहा: हे
मूसा! (राज्य के) प्रमुख परामर्श कर
रहे हैं तेरे विषय में कि तुझे बध कर
दें, अतः तू निकल जा। वास्तव में मैं
तेरे शुभचिन्तकों में से हूँ।

21. तो वह निकल गया उस (नगर) से
डरा सहमा हुआ। उस ने प्रार्थना
की: हे मेरे पालनहार! मुझे बचा ले
अत्याचारी जाति से।

إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ①

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا
لِّلْمُجْرِمِينَ ②

فَاصْبَرَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي
اسْتَصْرَفَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهُ قَالَ لَهُ مُوسَى
إِنَّكَ لَفِئْتَى مُبِينٍ ③

فَلَمَّا أَنْ أَرَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ
لَّهُمَا قَالِ يَهُوسُفُ أَتُرِيدُ أَنْ تَقْتُلَنِي كَمَا
قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ
جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ
الْمُصْلِحِينَ ④

وَجَاءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَى قَالَ
يَهُوسُفُ إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُونَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ
فَاخْرُجْ إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ⑤

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ
الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ⑥

22. और जब वह जाने लगा मद्यन की ओर, तो उस ने कहा: मुझे आशा है कि मेरा पालनहार मुझे दिखायेगा सीधा मार्ग।

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَاءَ مَدْيَنَ قَالَ عَلَىٰ رَئْيِ أَن يَهْدِيَنِي سَوَاءَ النَّبِيلِ ۝

23. और जब उतरा मद्यन के पानी पर तो पाया उस पर लोगों का एक समूह जो (अपने पशुओं को) पानी पिला रहा था तथा पाया उस के पीछे दो स्त्रियों को (अपने पशुओं को) रोकती हुई। उस ने कहा: तुम्हारी समस्या क्या है? दोनों ने कहा: हम पानी नहीं पिलाती जब तक चरवाहे चले न जायें, और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِّنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۚ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصَدِّرَ الرِّعَاءَ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ۝

24. तो उस ने पिला दिया दोनों के लिये। फिर चल दिया छाया की ओर, और कहने लगा: हे मेरे पालनहार! तू जो भी भलाई मुझ पर उतार दे मैं उस का आकांक्षी हूँ।

فَسَقَىٰ لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ۝

25. तो आई उस के पास दोनों में से एक स्त्री चलती हुयी लज्जा के साथ, उस ने कहा: मेरे पिता^[1] आप को बुला रहे हैं। ताकि आप को उस का पारिश्रमिक दें जो आप ने पानी पिलाया है हमारे लिये। फिर जब (मूसा) उस के पास पहुँचा और पूरी कथा उसे सुनाई तो उस ने कहा: भय न कर। तू मुक्त हो गया अत्याचारी^[2] जाति से।

فَجَاءَتْهُ إِحْدَاهُمَا تَشْهِي عَلَىٰ اسْتِحْيَاءٍ ۖ قَالَتْ إِنَّ إِلَىٰ يَدِ غَوْلٍ لِّيمْزِرَنَّكَ أَجْرًا مَا سَفَعْتِ لَنَا ۖ فَلَمَّا جَاءَهُ وَقَضَىٰ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۖ قَالَ لَا تَخَفْ ۖ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

1 व्याख्या कारों ने लिखा है कि वह आदरणीय शूएब (अलैहिस्सलाम) थे जो मद्यन के नबी थे। (देखिये: इब्ने कसीर)

2 अर्थात् फिरऔनियों से।

26. कहा उन दोनों में से एक ने: हे पिता! आप इन को सेवक रख लें, सब से उत्तम जिसे आप सेवक बनायें वही हो सकता है जो प्रबल विश्वासनीय हो।
27. उस ने कहा: मैं चाहता हूँ कि विवाह दूँ तुम्हें अपनी इन दो पुत्रियों में से एक से, इस पर कि मेरी सेवा करोगे आठ वर्ष, फिर यदि तुम पूरा कर दो दस (वर्ष) तो यह तुम्हारी इच्छा है। मैं नहीं चाहता कि तुम पर बोझ डालूँ, और तुम मुझे पाओगे यदि अल्लाह ने चाहा तो सदाचारियों में से।
28. मूसा ने कहा: यह मेरे और आप के बीच (निश्चित) है। मैं दो में से जो भी अवधि पूरी कर दूँ, मुझ पर कोई अत्याचार न हो। और अल्लाह उस पर जो हम कह रहे हैं निरीक्षक है।
29. फिर जब पूरी कर ली मूसा ने अवधि और चला अपने परिवार के साथ तो उस ने देखी तूर (पर्वत) की ओर एक अग्नि। उस ने अपने परिवार से कहा: रुको मैं ने देखी है एक अग्नि, संभव है तुम्हारे पास लाऊँ वहाँ से कोई समाचार अथवा कोई अंगार अग्नि का ताकि तुम ताप लो।
30. फिर जब वह वहाँ आया तो पुकारा गया वादी के दायें किनारे से, शुभ क्षेत्र में वृक्ष से: हे मूसा! निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ सर्वलोक का पालनहार।
31. और फेंक दो अपनी लाठी, फिर जब उसे देखा कि रेंग रही मानो वह कोई

قَالَتْ أَحَدُهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ ⑤

قَالَ إِنِّي لُرِيدُ أَنْ أَمْلِكَ إحدَى ابْنَتَي هَاتَيْنِ عَلَى أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَنِي حَبِيرًا وَإِنْ أَتَمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَمْلِكَ عَلَيْكَ سَجْدَةً ⑥ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ⑦

قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ⑧

فَلَمَّا قَضَى مُوسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا تَآخَرُ إِلَيَّ فَبِئْسَ الْبَخِيلُ أَوْ جَدَّوْهُ ⑨ مِنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ⑩

فَلَمَّا آتَاهَا نُودِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبَارَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يَمْوَسَى إِلَى آتَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ⑪

وَأَنْ أُلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَأَاهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا

सर्प हो तो भागने लगा पीठ फेर कर और पीछे फिर कर नहीं देखा। हे मूसा! आगे आ तथा भय न कर, वास्तव में तू सुरक्षितों में से है।

32. डाल अपना हाथ अपनी जेब में वह निकलेगा उज्ज्वल हो कर बिना किसी रोग के। और चिमटा ले अपनी ओर अपनी भुजा, भय दूर करने के लिये तो यह दो खुली निशानियाँ हैं तेरे पालनहार की ओर से फिरऔन तथा उस के प्रमुखों के लिये, वास्तव में वह उल्लंघनकारी जाति है।

33. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मैं ने बध किया है उन के एक व्यक्ति को। अतः मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार देंगे।

34. और मेरा भाई हारून मुझ से अधिक सुभाषी है, तू उसे भी भेज दे मेरे साथ सहायक बना कर ताकि वह मेरा समर्थन करे, मैं डरता हूँ कि वह मुझे झुठला देंगे।

35. उस ने कहा: हम तुझे बाहुबल प्रदान करेंगे तेरे भाई द्वारा, और बनायेंगे तुम दोनों के लिये ऐसा प्रभाव कि वह तुम दोनों तक नहीं पहुँच सकेंगे अपनी निशानियों द्वारा, तुम दोनों तथा तुम्हारे अनुयायी ही ऊपर रहेंगे।

36. फिर जब मूसा उन के पास हमारी खुली निशानियाँ लाया, तो उन्होंने ने कह दिया कि यह तो केवल घड़ा हुआ जादू है और हम ने कभी नहीं सुनी यह बात अपने पूर्वजों के युग में।

جَانٌّ وَلِي مُدِيرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَمُوسَى أَفْمِلْ وَلَا تَحْزَنْ إِنَّكَ مِنَ الْأَمِينِينَ ۝

أَسْلَكَ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخَرُّجَ بَيْضًا مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۖ وَأَضْمَرَ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ ۖ فَذَلِكُنَا بُرْهَانُنْ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يُقَتِّلُونِي ۝

وَأَخِي هَارُونُ هُوَ أَفْضَلُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسَلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُصَدِّقُنِي ۚ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ۝

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَجَعَلْنَا لَكُمَا سُلْطَانًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا بِآيَاتِنَا ۖ أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغَالِبُونَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا يَتَذَكَّرُ أَلْوَاهِدًا الْأَسْحَرُ تُفْتَرَىٰ وَمَا سِيعُنَا بِهَذَا إِنَّا بِآيَاتِنَا الْأُولَىٰ ۝

37. तथा मूसा ने कहा: मेरा पालनहार अधिक जानता है उसे जो मार्ग दर्शन लाया है उस के पास से और किस का अन्त अच्छा होना है? वास्तव में अत्याचारी सफल नहीं होंगे।
38. तथा फिरऔन ने कहा: हे प्रमुखो! मैं नहीं जानता तुम्हारा कोई पूज्य अपने सिवा। तो हे हामान! इंटें पकवा कर मेरे लिये एक ऊँचा भवन बना दे। संभव है मैं झाँक कर देख लूँ मूसा के पूज्य को, और निश्चय मैं उसे समझता हूँ झूठों में से।
39. तथा घमंड किया उस ने तथा उस की सेनाओं ने धरती में अवैध, और उन्होंने ने समझा कि वह हमारी ओर वापिस नहीं लाये जायेंगे।
40. तो हम ने पकड़ लिया उसे और उस की सेनाओं को, फिर फेंक दिया हम ने उन्हें सागर में, तो देखो कि कैसा रहा अत्याचारियों का अन्त (परिणाम)।
41. और हम ने उन्हें बना दिया ऐसा अगुवा जो बुलाते हों नरक की ओर तथा प्रलय के दिन उन की सहायता नहीं की जायेगी।
42. और हम ने पीछे लगा दिया उन के संसार में धिक्कार को और प्रलय के दिन वह बड़ी दुर्दशा में होंगे।
43. और हम ने मूसा को पुस्तक प्रदान की इस के पश्चात् कि हम ने

وَقَالَ مُوسَى رَبِّيْ اَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُوْنَ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا اَيُّهَا الْمَلَكُ مَا عَلِمْتُ لَكَ مِنْ اِلٰهٍ غَيْرِىْ ۚ فَادْعُ لِىْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطَّيْرِ ۚ فَاجْعَلْ لِىْ صَرْحًا لَّعَلَّ اُظْلِعُ اِلَى الْاِلٰهِ مُوسٰى وَآتٰى لَّاظْنَهٗ مِنَ الْكَذِبِيْنَ ۝

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُودُهٗ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝

فَاَخَذْنٰهُ وَجُودَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِيْنَ ۝

وَجَعَلْنٰهُمْ اٰيَةً يَّذُكُّوْنَ اِلَى النَّارِ وَیَوْمَ الْقِيَمَةِ لَا يَنْصُرُوْنَ ۝

وَاتَّبَعْنٰهُمْ فِى هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَیَوْمَ الْقِيَمَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ۝

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوسٰى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَا

विनाश कर दिया प्रथम समुदायों का, ज्ञान का साधन बना कर लोगों के लिये तथा मार्गदर्शन और दया ताकि वे शिक्षा लें।

44. और (हे नबी!) आप नहीं थे पश्चिमी दिशा में^[1] जब हम ने पहुँचाया मूसा की ओर यह आदेश और आप नहीं थे उपस्थितों^[2] में।

45. परन्तु (आप के समय तक) हम ने बहुत से समुदायों को पैदा किया फिर उन पर लम्बी अवधि बीत गई तथा आप उपस्थित न थे मदन के वासियों में कि सुनाते उन्हें हमारी आयतों और परन्तु हम ही रसूलों को भेजने^[3] वाले हैं।

46. तथा नहीं थे आप तूर के अंचल में जब हम ने उसे पुकारा, परन्तु आप के पालनहार की दया है, ताकि आप सतर्क करें जिन के पास नहीं आया कोई सचेत करने वाला आप से पूर्व, ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।

47. तथा यदि यह बात न होती कि उन पर कोई आपदा आ जाती उन के कर्तूतों के कारण, तो कहते कि

أَهْلَكْنَا الْقُرُونِ الْأُولَىٰ بِصَآئِرٍ
لِّلنَّاسِ وَهَدَىٰ وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٨﴾

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْعَرَبِ إِذْ قَضَيْنَا إِلَىٰ مُوسَى
الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٢٩﴾

وَلَكِنَّا أَنشَأْنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ وَمَا كُنْتَ
تَلَوِّيًّا فِي أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُو عَلَيْهِمُ آيَاتِنَا
وَلَكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ﴿٣٠﴾

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَّحِمَةً
مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِن نَّذِيرٍ
مِّن قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٣١﴾

وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُم مُّصِيبَةٌ لِّمَا قَدَّمَتْ
أَيْدِيهِمْ فَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا

1 पश्चिमी दिशा से अभिप्राय तूर पर्वत का पश्चिमी भाग है जहाँ मूसा (अलैहिस्सलाम) को तौरात प्रदान की गई।

2 इन से अभिप्राय वह बनी इस्राईल हैं जिन से धर्मविधान प्रदान करते समय उस का पालन करने का वचन लिया गया था।

3 भावार्थ यह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हजारों वर्ष पहले के जो समाचार इस समय सुना रहे हैं जैसे आँखों से देखे हों वह अल्लाह की ओर से वही के कारण ही सुना रहे हैं जो आप के सच्चे नबी होने का प्रमाण है।

हमारे पालनहार तू ने क्यों नहीं भेजा हमारी ओर कोई रसूल कि हम पालन करते तेरी आयतों का, और हो जाते ईमान वालों में से।^[1]

48. फिर जब आ गया उन के पास सत्य हमारे पास से तो कह दिया कि क्यों नहीं दिया गया उसे वही जो मूसा को (चमत्कार) दिया गया, तो क्या उन्होंने ने कुफ़ (इन्कार) नहीं किया उस का जो मूसा दिये गये इस से पूर्व? उन्होंने ने कहा: दो^[2] जादूगर हैं दोनों एक-दूसरे के सहायक हैं। और कहा: हम किसी को नहीं मानते।

49. (हे नबी!) आप कह दें: तब तुम्ही ला दो कोई पुस्तक अल्लाह की ओर से जो अधिक मार्ग दर्शक हो इन दोनों^[3] से, मैं चलूँगा उस पर यदि तुम सच्चे हो।

50. फिर भी यदि वे पूरी न करें आप की माँग, तो आप जान लें कि वे अपनी मनमानी कर रहे हैं, और उस से अधिक कुपथ कौन है जो मनमानी करे अपनी अल्लाह की ओर से बिना किसी मार्गदर्शन के? वास्तव में अल्लाह सुपथ नहीं दिखाता है अत्याचारी लोगों को।

رَسُولًا مِّنْ بَيْنِ يَدَيْكَ وَتَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالَ أُولَئِكَ
أَوَّلَىٰ بِمِثْلِ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ أَوَّلَمْ يَكْفُرُوا
بِمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ قَالُوا سِحْرَانِ
تَظَاهَرَا وَقَالُوا إِنَّا بِكُلِّ كَفْرًا ۝

قُلْ فَأْتُوا بِكِتَابٍ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ هُوَ أَهْدَىٰ
مِنْهُمَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝

إِن كُنتُمْ تَحِبُّونَ الْكَفَّ عِلْمَ أَشْمَايَتِيْعُونَ
أَهْوَاءَهُمْ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ اتَّبَعَ هَوَاهُ
هُدًى مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ۝

1 अर्थात् आप को उन की ओर रसूल बना कर इस लिये भेजा है ताकि प्रलय के दिन उन को यह कहने का अवसर न मिले कि हमारे पास कोई रसूल नहीं आया ताकि हम ईमान लाते।

2 अर्थात् मूसा (अलैहिस्सलाम) तथा उन के भाई हारून (अलैहिस्सलाम)। और भावार्थ यह है कि चमत्कारों की माँग, न मानने का एक बहाना है।

3 अर्थात् कुर्आन और तौरात से।

51. और (हे नबी!) हम ने निरन्तर पहुँचा दिया है उन को अपनी बात, (कुर्आन) ताकि वह शिक्षा ग्रहण करें।
52. जिन को हम ने प्रदान की है पुस्तक^[1] इस (कुर्आन) से पहले वह^[2] इस पर ईमान लाते हैं।
53. तथा जब उन्हें सुनाया जाता है तो कहते हैं: हम इस (कुर्आन) पर ईमान लाये, वास्तव में वह सत्य है हमारे पालनहार की ओर से, हम तो इस के (उतारने के) पहले ही से मुस्लिम हैं।^[3]
54. यही दिये जायेंगे अपना बदला दुहरा^[4] अपने धैर्य के कारण, और वह दूर करते हैं अच्छाई के द्वारा बुराई को। और उस में से जो हम ने उन्हें दिया है दान करते हैं।
55. और जब वह सुनते हैं व्यर्थ बात तो विमुख हो जाते हैं उस से। तथा कहते हैं: हमारे लिये हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिये तुम्हारे कर्म। सलाम है तुम पर हम (उलझना) नहीं चाहते आज्ञानों से।
56. (हे नबी!) आप सुपथ नहीं दर्शा सकते जिसे चाहें,^[5] परन्तु अल्लाह

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥١﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

وَإِذْ أُنْتَلَىٰ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ آمَنَابِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّنَا إِنََّّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ﴿٥٣﴾

أُولَٰئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا وَيَدْرَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٥٤﴾

وَإِذْ اسْمِعُوا الْغَوَا عَرْضًا عَنْهُ وَقَالَ الْإِنَّمَا أَعْمَلُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَا تَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ

1 अर्थात् तौरात तथा इंजील।

2 अर्थात् उन में से जिन्होंने ने अपनी मूल पुस्तक में परिवर्तन नहीं किया है।

3 अर्थात् आज्ञाकारी तथा एकेश्वरवादी हैं।

4 अपनी पुस्तक तथा कुर्आन दोनों पर ईमान लाने के कारण। (देखिये: सहीह बुखारी -97, मुस्लिम- 154)

5 हदीस में वर्णित है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के (काफिर)

सुपथ दर्शाता है जिसे चाहे, और वह भली - भाँति जानता है सुपथ प्राप्त करने वालों को।

يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۝

57. तथा उन्होंने ने कहा: यदि हम अनुसरण करें मार्ग दर्शन का आप के साथ, तो अपनी धरती से उचक^[1] लिये जायेंगे। क्या हम ने निवास स्थान नहीं बनाया है उन के लिये भयरहित ((हरम))^[2] को उन के लिये, खिंचे चले आ रहे हैं जिस की ओर प्रत्येक प्रकार के फल जीविका स्वरूप हमारे पास से? और परन्तु उन में से अधिकतर लोग नहीं जानते।

وَقَالُوا إِنَّا نَتَّبِعُ الْهُدَىٰ مَعَكَ نَتَّخِظُكَ مِنَ الْأَرْضِ وَأَكْمُ تُسْكِنُ لَهُمْ حَرَمًا مَّا يُحِبُّ إِلَيْنَا تَمَرْتُ كُلُّ شَيْءٍ رَزَقْنَا مِنْ لَدُنَّا وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝

58. और हम ने विनाश कर दिया बहुत सी बस्तियों का इतराने लगी जिन की जीविका। तो यह है उन के घर जो आबाद नहीं किये गये उन के पश्चात् परन्तु बहुत थोड़े और हम ही उत्तराधिकारी रह गये।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ بَطَرَتْ مَعِيشَتَهَا فَتِلْكَ مَسْكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا وَكُنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ۝

59. और नहीं है आप का पालन- हार विनाश करने वाला बस्तियों को जब तक उन के केन्द्र में कोई रसूल नहीं भेजता जो पढ़ कर सुनाये उन के समक्ष हामरी आयते, और हम बस्तियों का विनाश करने वाले नहीं परन्तु जब

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ فِي أُمِّهَا رَسُولًا يَتْلُوا عَلَيْهِمُ الْبَيِّنَاتِ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ۝

चाचा अबू तालिब के निधन का समय हुआ, तो आप उन के पास गये। उस समय उन के पास अबू जहल तथा अब्दुल्लाह बिन अबि उमय्या उपस्थित थे। आप ने कहा: चाचा ((ला इलाहा इल्लाह)) कह दें ताकि मैं क्यामत के दिन अल्लाह से आप की क्षमा के लिये सिफारिश कर सकूँ। परन्तु दोनों के कहने पर उन्होंने ने अस्वीकार कर दिया और उन का अन्त कुफ्र पर हुआ। इसी विषय में यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी हदीस नं०, 4772)

- 1 अर्थात् हमारे विरोधी हम पर आक्रमण कर देंगे।
- 2 अर्थात् मक्का नगर को।

उस के निवासी अत्याचारी हों।

60. तथा जो कुछ तुम दिये गये हो वह संसारिक जीवन का सामान तथा उस की शोभा है। और जो अल्लाह के पास है उत्तम तथा स्थायी है, तो क्या तुम समझते नहीं हो?

61. तो क्या जिसे हम ने वचन दिया है एक अच्छा वचन और वह पाने वाला हो उसे, उस के जैसा हो सकता है जिसे हम ने दे रखा है संसारिक जीवन का सामान फिर वह प्रलय के दिन उपस्थित किये लोगों में से होगा?^[1]

62. और जिस दिन वह^[2] उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहाँ है मेरे साझी जिन्हें तुम समझ रहे थे?

63. कहेंगे वह जिन पर सिद्ध हो चुकी है यह बात^[3]: हे हमारे पालनहार! यही है जिन्हें हम ने बहका दिया, और हम ने इन को बहकाया जैसे हम बहके, हम उन से अलग हो रहे हैं तेरे समक्ष, यह हमारी पूजा^[4] नहीं कर रहे थे।

64. तथा कहा जायेगा: पुकारो अपने साझियों को। तो वे पुकारेंगे, और वह उन्हें उत्तर तक नहीं देंगे, तथा वह यातना देख लेंगे तो कामना करेंगे कि उन्होंने सुपथ अपनाया होता!

وَمَا أُوْتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَزِينَتُهَا وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْغَى
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٠﴾

أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَنْ مَتَّعْنَاهُ
مَتَاعًا الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ
الْمُخْضَرِينَ ﴿٦١﴾

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ
الَّذِينَ أَغْوَيْنَا أَغْوَيْنَهُمْ كَمَا غَوَيْنَا تَبَرَّأْنَا إِلَيْكَ
مَا كَانُوا إِلَّا نَجَادُكَ يُبَدِّلُونَ ﴿٦٣﴾

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ قَدْ دَعَوْهُمْ فَلَمْ
يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ
كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾

1 अर्थात दण्ड और यातना का अधिकारी होगा।

2 अर्थात अल्लाह प्रलय के दिन पुकारेगा।

3 अर्थात दण्ड और यातना के अधिकारी होने की।

4 यह हमारे नहीं बल्कि अपने मन के पूजारी थे।

65. और वह (अल्लाह) उस दिन उन को पुकारेगा, फिर कहेगा: तुम ने क्या उत्तर दिया रसूलों को?

66. तो नहीं सूझेगा उन्हें कोई उत्तर उस दिन और न वह एक-दूसरे से प्रश्न कर सकेंगे।

67. फिर जिस ने क्षमा माँग ली^[1] तथा ईमान लाया और सदाचार किया, तो आशा कर सकता है कि वह सफल होने वालों में से होगा।

68. और आप का पालनहार उत्पन्न करता है जो चाहे, तथा निर्वाचित करता है। नहीं है उन के लिये कोई अधिकार, पवित्र है अल्लाह तथा उच्च है उन के साझी बनाने से।

69. और आप का पालनहार ही जानता है जो छुपाते हैं उन के दिल तथा जो व्यक्त करते हैं।

70. तथा वही अल्लाह^[2] है कोई वन्दनीय (सत्य पूज्य) नहीं है उस के सिवा, उसी के लिये सब प्रशंसा है लोक तथा परलोक में तथा उसी के लिये शासन है और तुम उसी की ओर फेरे^[3] जाओगे।

71. (हे नबी!) आप कहिये: तुम बताओ कि यदि बना दे तुम पर रात्रि को निरन्तर क़यामत के दिन तक, तो

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

فَعَيَّدَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسَىٰ أَنْ يَكُونَ مِنَ الْمُفْلِحِينَ ﴿٦٧﴾

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَنَ اللَّهِ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْحُكْمُ فِي الْأَوَّلِ وَالْآخِرَةِ وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٧٠﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِضِيَاءٍ

1 अर्थात् संसार में से।

2 अर्थात् जो उत्पत्ति करता तथा सब अधिकार और ज्ञान रखता है।

3 अर्थात् हिसाब और प्रतिफल के लिये।

أَفَلَا تَسْمَعُونَ ۝

कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास प्रकाश? तो क्या तुम सुनते नहीं हो?

72. आप कहिये: तुम बताओ, यदि अल्लाह कर दे तुम पर दिन को निरन्तर क्यामत के दिन तक, तो कौन पूज्य है अल्लाह के सिवा जो ला दे तुम्हारे पास रात्रि जिस में तुम शान्ति प्राप्त करो, तो क्या तुम देखते नहीं^[1] हो?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مِنْ إِلَهٍ غَيْرِ اللَّهِ يَأْتِيَكُمُ الْيَلِيلُ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝

73. तथा अपनी दया ही से उस ने बनाये हैं तुम्हारे लिये रात्रि तथा दिन ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो उस में और ताकि तुम खोज करो उस के अनुग्रह(जीविका) की, और ताकि तुम उस के कृतज्ञ बनो।

وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

74. और अल्लाह जिस दिन उन्हें पुकारेगा, तो कहेगा: कहाँ हैं वे जिन को तुम मेरा साझी समझ रहे थे?

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ أَيْنَ شُرَكَاءِيَ الَّذِينَ كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ۝

75. और हम निकाल लायेंगे प्रत्येक समुदाय से एक गवाह, फिर कहेंगे: लाओ अपने^[2] तर्क? तो उन्हें ज्ञान हो जायेगा कि सत्य अल्लाह ही की ओर है, और उन से खो जायेंगी जो बातें वे घड़ रहे थे।

وَنَرْعَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

76. कारून^[3] था मूसा की जाति में से। फिर उस ने अत्याचार किया उन पर, और हम ने उसे प्रदान किया

إِنْ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَى فَبَغَى عَلَيْهِمْ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءَ

1 अर्थात् रात्रि तथा दिन के परिवर्तन को।

2 अर्थात् शिर्क के प्रमाण।

3 यहाँ से धन के गर्व तथा उस के दुष्परिणाम का एक उदाहरण दिया जा रहा है कि कारून, मूसा (अलैहिस्सलाम) के युग का एक धनी व्यक्ति था।

इतने कोष कि उस की कुंजियाँ भारी थीं एक शक्तिशाली समुदाय पर। जब कहा उस से उस की जाति ने: मत इतरा, वास्तव में अल्लाह प्रेम नहीं करता है इतराने वालों से।

77. तथा खोज कर उस से जो दिया है अल्लाह ने तुझे आखिरत (परलोक) का घर, और मत भूल अपना संसारिक भाग और उपकार कर जैसे अल्लाह ने तुझ पर उपकार किया है। तथा मत खोज कर धरती में उपद्रव की, निश्चय अल्लाह प्रेम नहीं करता है उपद्रवियों से।

78. उस ने कहा: मैं तो उसे दिया गया हूँ बस अपने ज्ञान के कारण। क्या उसे यह ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह ने विनाश किया है उस से पहले बहुत से समुदायों को जो उस से अधिक धन तथा समूह में, और प्रश्न नहीं किया जाता^[1] अपने पापों के सम्बंध में अपराधियों से।

79. एक दिन वह निकला अपनी जाति पर अपनी शोभा में, तो कहा उन लोगों ने जो चाहते थे संसारिक जीवन: क्या ही अच्छा होता कि हमारे लिये (भी) उसी के समान (धन- धान्य) होता जो दिया गया है कारून को! वास्तव में वह बड़ा शौभाग्यशाली है।

80. तथा उन्होंने ने कहा जिन को ज्ञान

بِالْعَصْبَةِ أُولَى الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ⑥

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ⑦

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي أَوَلَمْ يَعْلَم أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَمْعًا وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوبِهِ الْمُجْرِمُونَ ⑧

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لِيَلْبَسُنَّ مِثْلَ مَا أَتَىٰ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ⑨

وَقَالَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْعِلْمَ وَيَلَكُمْ تَوَابُ اللَّهِ خَيْرٌ

1 अर्थात् विनाश के समय।

दिया गया: तुम्हारा बुरा हो! अल्लाह का प्रतिकार उस के लिये उत्तम है जो ईमान लाये तथा सदाचार करे, और यह सोच धैर्यवानों ही को मिलती है।

لِمَنِ امْنٌ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا يُلْقِمُهَا إِلَّا
الضَّالُّونَ ۝

81. अन्ततः हम ने धंसा दिया उस के तथा उस के घर सहित धरती को, तो नहीं रह गया उस का कोई समुदाय जो सहायता करे उस की अल्लाह के आगे, और न वह स्वयं अपनी सहायता कर सका।

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ
يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَمَا كَانَ مِنَ
الْمُنْتَصِرِينَ ۝

82. और जो कामना कर रहे थे उस के स्थान की कल, कहने लगे: क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह अधिक कर देता है जीविका जिस के लिये चाहता हो अपने दासों में से और नाप कर देता है (जिसे चाहता है)। यदि हम पर उपकार न होता अल्लाह का, तो हमें भी धंसा देता। क्या तुम देखते नहीं कि काफिर (कृतघ्न) सफल नहीं होते।

وَأَصْبَحَ الَّذِينَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ
وَيَكَانَ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَقْدِرُ لَوْ أَنَّ مِنَ اللَّهِ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا
وَيَكَانَ لَهُ لَا يَفْلَحُ الْكَافِرُونَ ۝

83. यह परलोक का घर (स्वर्ग) है हम उसे विशेष कर देंगे उन के लिये जो नहीं चाहते बड़ाई करना धरती में और न उपद्रव करना, और अच्छा परिणाम आज्ञा-कारियों^[1] के लिये है।

تِلْكَ الدَّارُ الْآخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا
يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فُسَادًا وَالْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِينَ ۝

84. जो भलाई लायेगा उस के लिये उस से उत्तम (भलाई) है। और जो बुराई लायेगा तो नहीं बदला दिया जायेगा उन को जिन्होंने बुराईयाँ की हैं

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَمَنْ جَاءَ
بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ
إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

1 इस में संकेत है कि धरती में गर्व तथा उपद्रव का मूलाधार अल्लाह की अवैज्ञा है।

परन्तु वही जो वे करते रहे।

85. और (हे नबी!) जिस ने आप पर कुर्आन उतारा है वह आप को लौटाने वाला है आप के नगर (मक्का) की^[1] ओर। आप कह दें कि मेरा पालनहार भली-भाँति जानने वाला है कि कौन मार्गदर्शन लाया है, और कौन खुले कुपथ में है।

86. और आप आशा नहीं रखते थे कि अवतरित की जायेगी आप की ओर यह पुस्तक^[2], परन्तु यह दया है आप के पालनहार की ओर से अतः आप कदापि न हों सहायक काफ़िरों के।

87. और वह आप को न रोके अल्लाह की आयतों से इस के पश्चात् जब उतार दी गई आप की ओर, और बुलाते रहें अपने पालनहार की ओर। और कदापि आप न हों मुश्रिकों में से।

88. और आप न पुकारें किसी अन्य पूज्य को अल्लाह के साथ, नहीं है कोई बंदनीय (सत्य पूज्य) उस (अल्लाह) के सिवा। प्रत्येक वस्तु नाशवान है सिवाय उस के स्वरूप के। उसी का शासन है और उसी की ओर तुम सब फेरे^[3] जाओगे।

إِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَأْدُكَ إِلَى
مَعَادٍ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَى
وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُلْقَى إِلَيْكَ الْكِتَابُ
إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا
لِلْكَافِرِينَ ۝

وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آلِيتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أَنْزَلَتْ
إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَى رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الْمُشْرِكِينَ ۝

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ
شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ۝

1 अर्थात् आप जिस शहर मक्का से निकाले गये हैं उसे विजय कर लेंगे। और यह भविष्य वाणी सन् 8 हिजरी में पूरी हुई (सहीह बुखारी: 4773)

2 अर्थात् कुर्आन पाक।

3 अर्थात् प्रलय के दिन हिसाब तथा अपने कर्मों का फल पाने के लिये।